उपसंहार

सिनेमा बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय कला है। सिनेमा ने परंपरागत कला रूपों के कई पक्षों और उपलब्धियों को आत्मसात कर लिया है। आधुनिक तकनीक की उपलब्धियों का सीधा लाभ सिनेमा लेता है। सिनेमा की अपील पूरी तरह से सार्वभौमिक है। सिनेमा आसानी से नई तकनीक आत्मसात कर लेता है। इसने अपने कलात्मक क्षेत्र का विस्तार मूक सिनेमा से लेकर सवाक् सिनेमा, रंगीन सिनेमा, 3डी सिनेमा, स्टीरियो साउंड, वाइड स्क्रीन और आई मेक्स तक किया है। आइंसटाइन (मोंताज) डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ (क्लोजअप), राबर्ट डब्लू पॉल, जेम्स विलियमसन, एडविन एस पोर्टर, जॉर्ज मेलिए, लेव कुलेशोव, पुड़ोवकिन, जैसे दिग्गजों के योगदान से विश्व सिनेमा समृद्ध हुआ है। दूसरे देशों की तकनीकी प्रगति का मुकाबला भारत सिर्फ़ अपने हुनर और नए-नए प्रयोगों से कर पाया है। सिनेमा आज विश्व सभ्यता के बहुमूल्य खजाने का अनिवार्य हिस्सा है। हालीवुड से अत्यधिक प्रभावित होने के बावजूद भारतीय सिनेमा ने अपनी लंबी विकास यात्रा में अपनी पहचान, आत्मा और दर्शकों को बचाए रखा है।

इस आधार पर प्रथम अध्याय के दौरान देखा गया कि सिनेमा बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय कला है जिसका जन्म मानव मन की एक छोटी सी जिज्ञासा से हुआ जिसे विज्ञान, फोटो तकनीक तथा दृष्टि क्रिया विज्ञान के क्षेत्रों में हुए तरक्की ने संभव बनाया है। सिनेमा ने परंपरागत कला रूपों के कई पक्षों और उपलब्धियों को आत्मसात कर लिया है – मसलन आधुनिक उपन्यास की तरह यह मनुष्य की भौतिक क्रियाओं को उसके अंतर्मन से जोड़ता है, पेटिंग की तरह संयोजन करता है और छाया तथा प्रकाश की अंतर्क्रियाओं को आंकता है। रंगमंच, साहित्य, चित्रकला, संगीत की सभी सौन्दर्यमूलक विशेषताओं और उनकी मौलिकता से सिनेमा आदे निकल गया है। इसका सीधा कारण यह है कि सिनेममें साहित्य (पटकथा,गीत), चित्रकला (एनीमेटेज कार्टून, बैकड्रॉप्स), चाक्षुष कलाएं

और रंगमंच का अनुभव, (अभिनेता, अभिनेत्रिया) और ध्वनिशास्त्र (संवाद, संगीत) आदि शामिल हैं। आधुनिक तकनीक की उपलब्धियों का सीधा लाभ सिनेमा लेता है।

दूसरे अध्याय के रूप में सिनेमा को समझने कि कोशिश कि गई है । जिस प्रकार शब्द और ध्वनि के समायोजन से वाणी का जन्म हुआ या रंग और आकार से चित्रकला का, ठीक उसी प्रकार एक ही समतल प्रकाश और छाया के समेकन से सिनेमा की उत्पत्ति हुई है। प्रारम्भिक फ़िल्मकार पूरी तरह से सिनेमा की क्षमता और संभावनाओं की पड़ताल नहीं कर पाये। इसलिए पर्दे पर चलती फिरती आकृतियों को ही दिखाकर संतुष्ट रहे। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के समाप्त होते होते सिनेमा की अध्यानात्मक संरचन अस्तित्व में आई। यह अवाक फिल्मों का दौर था। संवाद के अभाव में सिनेआख्यान को भाषी और व्याकारण के - नियमों से बांधना जटिल कार्य था। कैमरे की मूवमेंट और एडिटिंग के खास प्रयोग से व्याकरण की प्रारम्भिक संरचना तैयार की।-फ़िल्मकारों ने सिनेमा की भाष जिस प्रकार कहानी के आख्यान के शब्दों के शिल्प से निखारा जा सकता है उसी प्रकार सिनेआख्यान को - शॉट्स और दृश्यों के सुनिश्चित क्रम में अव्यवस्थित कर प्रस्तुत किया जा सकता है। अर्थात फिल्म की भाषा मे शॉट्स की वही भाषा होगी जो साहित्य की भाषा में शब्दो की।

तीसरे अध्याय के अंतर्गत फिल्म निर्माण कि प्रक्रिया को बताया गया है । इस प्रक्रिया के अंतर्गत ही मुख्यतः किसी फिल्म का निर्माण होता है और फिल्म दर्शकों तक पहुँच पाती है । फिल्म से जुड़े हर व्यक्ति कि अपनी अहम भूमिका होती है । फिल्म निर्माण एक प्रारंभिक स्टोरी आइडिया या कमिशन से, पटकथा लेखन, शूटिंग, संपादन, निर्देशन एवं दर्शकों तक उसके वितरण के माध्यम से फिल्म निर्माण की एक प्रक्रिया है । आमतौर पर, इसमें भारी संख्या में लोग शामिल रहते हैं और इसके पूरा होने में कुछ महीने से लेकर कुछ वर्ष लग जाते हैं। फिल्म निर्माण का कार्य दुनिया भर में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों की एक विशाल श्रेणी में सभी जगह घटित होता है और इसमें प्रौद्योगिकी और तकनीक की विभिन्न

किस्मों का उपयोग किया जाता है।

चौथे अध्याय के अंतर्गत सम्पादन के इतिहास पर चर्चा कि गई है जिसमें हमें ये मालूम हुआ कि सिनेमा के जन्म की कहानी भी बेहद दिलचस्प और फंतासी से भरपूर फिल्मी दृश्य जैसी ही है। प्रारंभिक फिल्में , लघु फिल्में हुआ करती थी जो एक ही जगह पे रख कर फिल्माया जाता था उसमें न कोई कहानी न ही सम्पादन हुआ करता था । राबर्ट डब्लू पॉल, जॉर्ज अल्बर्ट स्मिथ और जेम्स विलियमसन, एडविन एस पोर्टर, जॉर्ज मेलिए, लेव कुलेशोव, पुड़ोवकिन, आइजेन्स्टाइन और डी डब्लू ग्रिफिथ आदि ने फिल्म के टुकड़ों को आपस में जोड़कर फिल्म को मूर्त रूप दिया।

पांचवें अध्याय में फिल्मों के सम्पादन पे चर्चा कि गई है जिसमें लिनियर और नॉन लिनियर सम्पादन अर्थात वर्कप्रिंट (पोजिटिव) और डिजिटल फिल्म रॉ मटेरियल को किस तरह से संपादित किया जाता है इस पर प्रकाश डाला गया है । प्रारंभिक दौर में, संपादन यांत्रिक उपकरण की मदद से किया जाता था जो की कि उचित रूप से एक साथ रैखिक संपादित रीलों डाल दिया जाता था । डिजिटल क्रांति और तकनीकी विकास के बाद जादुई उत्पादन प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

छठे अध्याय में फिल्म सम्पादन तकनीक पर प्रकाश डाला गया है जिसमें यह पता चला की मशीनों कि सहायता से संपादक तकनीक का इस्तेमाल कर किसी फिल्म को खूबसूरत बना सकता है। डिजिटल संपादन के साथ, यह बहुत आसान हो गया की आप सबसे पहले फिल्म फूटेज को किसी हार्ड डिस्क में स्टोर कर के उसके बाद उसको कम्प्युटर से ज़ोरकर किसी नॉन लिनियर एडिटिंग सॉफ्टवेअर पर फिल्म को संपादित किया जाता है। यह शॉट्स के बीच ट्रंजिसन से परे फेड, डिजोल्ब, वाइप और कट के साथ लगा कर हम किसी भी दृश को प्रभावशाली बनाते हैं और ट्रंजिसन को समय संकेत के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

सातवें अध्याय में फिल्मों में संपादक कि भूमिका क्या होती है इस पर चर्चा कि गई है । इसके अंतर्गत फिल्म संपादक का मुख्य कार्य मोशन पिक्चर, फिल्म तथा वीडियो का संपादन करना है। संपादक फिल्माए गए टेपरील में से विजुअल के सिक्वेंस को सिलसिलेवार तरीके / से जमाने के साथसाथ दर्शकों को आकर्षित करने के लिए जो भी आवश्यक हो, ध्वनि संगीत तथा प्रभाव को जोड़ता है।

यह संपादक के कौशल का कमाल होता है कि वह अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता और प्रभाव का निर्धारण करता है। संपादक दृश्यों के विश्लेषण, मूल्यांकन, उसे काटने छाटने जमाने या जोड़ने के लिए आधुनिकतम उपकरणों का उपयोग कर उत्पादन कर्मियों के साथ मिलकर काम करते हैं। सामान्यतः संपादक उपकरणों तथा मशीनों की मदद से एडिटिंग अथवा संपादन का काम किया जाता है।

शोध के दौरान हमने पाया कि सिनेमा, सिनेमा कि भाषा,सिनेमा का व्याकरण और सिनेमा कि संरचना में कैसे धीरे-धीरे विकास हुआ । फिल्म-निर्माण में सम्पादन कि शुरुआत किस तरह से हुई और कुछ महान फ़िल्मकारों की वजह से फिल्म सम्पादन की संरचना का विकास किस तरह से हुआ और साथ ही फिल्मों का संपादक किस तरह से अपने हुनर और कौशल के जरिये किसी फिल्म को बेहतर बना सकता है । कुल मिला कर इस शोधकार्य में सिनेमा और फिल्म-निर्माण में सम्पादन और संपादक के उन पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिनसे हो कर आज का सिनेमा हमारे सामने आया है ।